प्राप्ति के पहले से काम करता आ रहा है। इसकी 160 शाखाएं है पहले यह विभाग वित्त मंत्रालय के अन्तर्गत था। अब अगस्त 1983 से यह रक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत है।

सन् 1971 में इस कार्यालय को विभाजित कर शिलांग ले जाने का प्रयत्न किया गया। 19 5 से पटना कार्यालय में हो रहे कार्यों को धीरे धीरे कलकत्ता सिलीगुडी और शिलांग में ले जाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई। कर्मचारियों द्वारा इन कदमो का विरोध करने पर उन्हे आश्वासन दिया गया कि पटना कार्यालय में हो रहे कार्य एव कर्मचारी यथावत रहेगे।

आश्वासनों के बावजूद मई 1982 मे अचानक पटना कमान के ही अंदर एक दूसरा कार्यालय गोहाटी में खोल दिया गया। कर्मचारियों ने पटना कार्यालय के कामो एवं कर्मचारियों की संख्या में कटौती के मसले को लेकर 50 दिनो तक विरोध आंदोलन चलाया। बिहार विधान मडलों के कुछ सदस्यों, सासदों एवं बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने वित्त मत्री को ज्ञापन देकर पटना कार्यालय को कमजोर करने का विरोध किया। वित्त मंत्री ने 27 जुलाई 1982 को आश्वासन भी दिया कि पटना रक्षा लेखा कार्यालय को किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुंचाई जाएगी। परतु इस आश्वासन के बावजूद सितबर 1983 से पटना कार्यालय के काम और कर्मचारी बाहर भेजे जा रहे है। सरकार से कर्मचारियों की मांग है कि वह जहां चाहे रक्षा लेखा कार्यालय खोले पर पटना मुख्यालय को यथावत रहने दिया जाए।

मेरा रक्षा मत्री से अनुरोध है कि वह वित्त मंत्री के आश्वासन के अनुसार काम कर रहे कर्मचारियों में व्याप्त असंतोष को दूर करें अन्यथा स्थिति विस्फोटक हो जा सकती है।

(ix) Steps to improove the working of Madhva Pradesh Electric Instrument Ltd.

श्री बाबूराव परांजपे (जबलपुर) : मध्य प्रदेश विद्युत यंत्र लिमिटेड नामक उद्योग जबलपुर के गोसलपुर नामक स्थान पर 20 अप्रैल, 1974 को स्थापित हुआ तथा 20 अप्रैल, 1976 को उत्पादन प्रारंभ हुआ। इस उद्योग में मध्य प्रदेश तथा कर्नाटक राज्य की पूंजी लगी है तथा इस उद्योग का संचालन कर्नाटक राज्य द्वारा भेजे गए शासकीय अधिकारियों द्वारा किया जाता है। इस कारखाने में बिजली उत्पादन हेतु आवश्यक ट्रासफारमरों का निर्माण किया जाता है।

यह उद्योग लगातार घाटे में चल रहा है। उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चा माल तथा अतिरिक्त पूंजी जुटा पाने में संचालक असफल रहे है। उत्पादन की गति अत्यंत दयनीय है। इस कारण बहुत बड़ा नुकसान हो रहा है। आज इस उद्योग की स्थिति यह है कि इसमें शेयर 80 लाख के है परंतु घाटा अनुमानत: 2 करोड़ तक पहुंच गया है।

गोसलपुर जैसे पिछड़े क्षेत्र में एकमात्र उद्योग है जिसके कारण बड़ी मात्रा में श्रमिक रोजी रोटी पा रहे हैं। यदि यह उद्योग बंद हो गया तो विषम परिस्थिति का निर्माण हो सकता है। वित्तीय संस्थाएं नया कर्ज देने को तैयार नहीं हैं तथा उत्पादन हेतु

[श्री बाबू राव परांजपे]

कच्चे माल का अभाव होने के कारण आज उत्पादन की गति अत्यंत दयनीय है ।

अत: केन्द्रीय मंत्री जी से अनुरोध है कि कर्नाटक शासन के प्रभुत्व से उद्योग मुक्त कराकर स्वयं केन्द्र शासन इसको ढीक ढंग से संचालित करे ताकि यह उद्योग बन्द होने से बच जाए ।

(x) Financial Assistance to Tamilnadu to rehabilitate flood-affected people.

SHRI S.T.K. JAKKAYAN (Periyakulam) : The unseasonal torrential rain throughout Tamil Nadu from February 5th to 15th has left a trail of destruction. 110 people have lost their lives; 16,300 heads of cattle are dead. 43 lakhs of people in 5893 villages are affected. The crops on 2.2 lakh acres have been uprooted. 3 27 lakh huts have been destroyed. 3183 irrigation works, 611 bridges, 1,110 school and hospital buildings have been damaged. 7000 kms. of roads are under repair. 319 kms. of roads have been completely destroyed. The districts of Tiruchirpalli, South Arcot, Pudukottai, Ramanathapuram, Tirunelveli North Arcot and Chengleput are reeling under the flood havoc. This has been preceded by heavy rains for three days in December and the vast areas of the State are submerged in water. The Central Government has so far given Rs. 15 crores as flood relief assistance. But the State Government has spent Rs. 37 54 crores. After sending detailed reports about the floods, the State Government has asked for a sum of Rs. 128 crores. It is requested that the Centre may sanction immediately flood relief assistance to the tune of Rs. 128 crores and rehabilitate the flood-affected people of Tamilnadu.

———

12.43 hrs.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS – Contd.

MR. DEPUTY SPEAKER : The House shall now take up further consideration of the following motion moved by Shri B.R. Bhagat and seconded by Shri Xavier Arakal on the 27th February, 1984, namely :—

"That an Address be presented to the President in the following terms :—

'That the Members of Lok Sabha assembled in this Session are deeply grateful to the President for the Address which be has been pleased to deliver to both Houses of Parliament assembled together on the 23rd February, 1984."

Shri Kamal Nath Jha to continue. He has already taken 15 minutes. Today, there is no lunch hour.

श्री कमल नाथ झा (महरसा) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं कल यह निवेदन कर रहा था कि हमारी सरकार या हमारे राष्ट्र का मूल्यांकन सिर्फ उसकी शक्ति या सम्पत्ति से करना बड़ी भारी भूल होगी हमारे देश भारतवर्ष की एक बड़ी ही प्राचीन संस्कृति है । वह संस्कृति अभी भी जीवित है और मानव जाति को आज भी उसकी आवश्यकता है ।

आज विश्व की जो परिस्थिति है, हिन्दुस्तान की जो स्थिति है और हिन्दुस्तान के इर्द-गिर्द जो स्थिति है, उसे हमारे राष्ट्रपति महोदय ने अपने अभिभाषण में इंगित किया है कि क्या खतरनाक स्थिति संसार की और खासकर भारत की है । हमारे पड़ौस में पाकिस्तान, श्री लंका, ईरान, ईराक लेबनान